तन्त्र-तन्त्र-तन्त्र-तन्त्र-तन्त्र-तन्त्र-तन्त्र

तंत्र महा विज्ञान की जानकारी उसके नियम, उसकी प्रक्रिया, साधना का क्रम जो साधक पूर्ण रूप से समझ लेता है, वह तन्त्र में प्रवीणता प्राप्त कर सकता है। तांत्रिक साधनाओं में न तो जाति का बन्धन है और न ही कर्म का। तन्त्र को मूल रूप से दो भागों में बांटा गया है, प्रथम है- देवी तन्त्र और दूसरा है मिश्र तन्त्र।

देवी तन्त्र की साधना साधक जहां ब्रह्मत्व प्राप्ति की भावना के साथ शुद्ध कार्यों हेतु मानसिक शान्ति तथा पाप एवं दोषों के निवारणार्थ सम्पन्न करता है, वही मिश्र तंत्र सांसारिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु जिसमें स्व उन्नति, शारीरिक सुख, अर्थ लाभ, आकस्मिक धन प्राप्ति, भूमि गर्भ धन प्राप्ति, शत्रु को पीड़ा, स्वप्न में फल के साथ-साथ वशीकरण, सम्मोहन, शारीरिक पीड़ा शान्ति सम्मिलित है।

जो अपनी इन्द्रियों को नियन्त्रण में रख सकता है, जो गुरु का सेवक है, जिसके खान-पान में शुद्धता है, जो जीवन में विशेष लालसाओं की पूर्ति करना चाहता है, उसे ही मिश्र तन्त्र की साधनाएं सम्पन्न करनी चाहिए। मिश्र तन्त्र की साधना में कर्ण पिशाचिनी साधना, चेटक तन्त्र, अदृश्य विद्या तन्त्र, वशीकरण स्तम्भन तन्त्र हैं परन्तु सबसे महत्वपूर्ण तन्त्र यक्षिणी तन्त्र है, इस यक्षिणी तन्त्र को किंकिणी तन्त्र भी कहा गया है। शिव द्वारा रचित इस वृहद तन्त्र विज्ञान में प्रयोगात्मक साधनात्मक विवरण हैं, जिनका पूर्ण पालन साधक को करना चाहिए।

अथ यक्षिणी (किंकिणी) तन्त्र परिशिष्ट

यक्षिणी साधना के भी कुछ विशेष नियम हैं, और यह साधना ध्यान में तत्पर, लालसा से उत्सुक होकर एकान्त और शान्त जगह पर शान्त चित्त होकर साधना करनी चाहिए।

जो देवी भक्त है, वही इस साधना का अधिकारी है।

जो यज्ञ होमादि को मानता है उसे शुभ यक्षिणियों की साधना करना चाहिए।

यक्षिणी साधना तीन रूपों में सम्पन्न की जा सकती है— १- माता के रूप में, २- बहन के रूप में, ३- प्रिया के रूप में।

सुसिद्धिप्रदा ३६ यक्षिणियां

१-विचित्रा, २-विभ्रमा, ३-हंसी, ४-भिक्षिणी, ५-जनरंजिका, ६-विशाला, ७-मदना, ८-घण्टा, ९-कालकर्णी, १०-महाभया, ११-माहेन्द्री, १२-शंखिनी, १३-चान्द्री, १४-श्मशानी, १५-वटयक्षिणी, १६-मेखला, १७-विकला, १८-लक्ष्मी, १९-कामिनी, २०-शतपत्रिका, २१-सुलोचना, २२-सुशोभना, २३-कपाली, २४-विलासिनी, २५-नटी, २६-कामेश्वरी, २७-स्वर्णरेखा, २८-सुरसुन्दरी, २९-मनोहरा, ३०-प्रमोदा, ३१-रागिणी, ३२-नखकेशिका, ३३-नेमिनी, ३४-पाद्मनी, ३५-स्वर्णावति, ३६-रतिप्रिया।

मुद्रा

यक्षिणी साधना में आह्वान, विसर्जन, हृदय, मुद्रा, गन्ध पुष्प अर्पण मुद्रा, तथा सबसे प्रमुख क्रोध मुद्रा ये सभी मुद्राएं अलग-अलग हैं। इनका पालन करते हुए ही साधना करनी चाहिए।

आह्वान मुद्रा

हथेली को समतल कर मध्यमा उंगलियों को विपरीत करें, अनामिका को बाहर निकली हुई छोड़ कर तर्जनी को भीतर मुड़ी कनिष्ठिका से अन्दर करें, यह श्रेष्ठतम आह्वान मुद्रा है, इस मुद्रा में बांएं अंगूठे से आह्वान किया जाता है।

आह्वान मन्त्र

।। ॐ ह्रीं आगच्छ (अमुक) यक्षिणी स्वाहा ।।

विसर्जन

साधना के पश्चात् की इसी मुद्रा में विसर्जन किया जाता है।

विसर्जन मन्त्र

।। ॐ ह्रीं गच्छा मूक यक्षिणीशीघ्रां पुनरागमनाय स्वाहा ।।

अभिमुखीकरण मुद्रा

आह्वान के पश्चात् इस मुद्रा में मन्त्र जप कर यक्षिणी को अपने सामने बिठाना चाहिए। दोनों हाथों की मुट्ठी बांध कर तर्जनी और मध्यमा उंगलियों को फैलाएं तथा ११ बार मन्त्र पढ़ें—

।। ॐ महायक्षिणी मैथुन प्रिये स्वाहा ।।

सान्निध्यकरण मुद्रा

यक्षिणी को अपने सान्निध्य में अर्थात् अपने पास बिठाने के लिए इस मुद्रा का प्रयोग कर मन्त्र बोलना चाहिए।

दोनों हाथों की मुट्ठी बांध कर हाथ आगे कर मुट्ठी फैलाएं और फिर बांधें, इस मुद्रा के दौरान ही निम्न मन्त्र बोलें—

॥ ॐ कामेश्वरी स्वाहा ॥

"ह्रीं" मन्त्र का सौ बार उच्चारण करते हुए दोनों हाथों को घड़े के आकार में स्थापित कर हृदय मुद्रा बनाएं। इससे यक्षिणी विशेष प्रसन्न होती है।

गन्ध, पुष्प, धूप, दीप को अर्पित कर दोनों हाथों की मुट्ठी बांध कर तर्जनी तथा मध्यमा को फैलावें तथा निम्न मन्त्र का सौ बार जप करें—

॥ ॐ सत्र मनोहारिणी स्वाहा ॥

इन सब प्रक्रियाओं के पश्चात् क्रोध मुद्रा में यक्षिणी का आकर्षण किया जाता है, इससे यक्षिणी अवश्य ही उपस्थित होती है, दोनों हाथों की मुट्ठी बांध कर कनिष्ठिकाओं से जोड़ें और तर्जनी को फैला कर मोड़ दें तथा यह प्रतिहत क्रोधांकुश मुद्रा यक्षिणी आकर्षण की विशेष मुद्रा है, इस मुद्रा में क्रोध मन्त्र का एक सहस्त्र (एक हजार) जप करना आवश्यक है —

क्रोध मन्त्र

॥ ॐ जूं कट्टकट्ट अमुक (यक्षिणी नाम) यक्षिणी ह्रीं यः यः हुं फट् ॥

यक्षिणी साधना में प्रत्येक यक्षिणी साधना के लिए उपरोक्त सामान्य विधान के आगे अलग-अलग विधान है, ऊपर लिखे सारे नियमों का तो पालन करना ही है, प्रत्येक यक्षिणी के लिए मन्त्र के साथ-साथ यन्त्र इत्यादि सामग्री और विशेष हवन तथा मन्त्र जप संख्या अलग-अलग है। उन सभी नियमों का पूर्ण पालन अवश्य ही होना चाहिए।

यह ध्यान रहे कि प्रत्येक यक्षिणी केवल एक विशेष सिद्धि से युक्त है और साधना में प्रसन्न होने पर केवल वही एक सिद्धि साधक को दे सकती है, शत्रु बाधा शान्ति प्रदान करने वाली यक्षिणी से वशीकरण सिद्धि प्राप्त नहीं की जा सकती, इसी प्रकार लक्ष्मी प्रदात्री यक्षिणी से गृहस्थ सुख अथवा सन्तान प्राप्ति वर नहीं मांगा जा सकता। अतः साधक स्वयं निर्णय कर जिस कार्य को सम्पन्न करना चाहते हैं, उसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु यह साधना सम्पन्न करें।

आगे के पृष्ठों में कुछ विशेष यक्षिणियों की साधना, उद्देश्य, फल तथा साधना रहस्य स्पष्ट किया जा रहा है, उसी के अनुसार साधक कार्य कर मनोवांछित फल प्राप्त कर सकता है। केवल आजमाने की दृष्टि से यक्षिणी साधना का कोई भी प्रयोग न करें, यह विशेष ध्यान रखें।

यक्षिणी साधना का जो विधान है, उसमें सभी नियमों का पालन करना अत्यन्त आवश्यक है। अब तक जो विवरण लिखा गया है, वह सभी प्रकार की यक्षिणी साधनाओं के लिए करना आवश्यक है, प्रत्येक यक्षिणी एक विशेष शक्ति की स्वामिनी है और उतना ही उसका क्षेत्र है। कुछ यक्षिणियों की साधना निर्जन स्थान में किसी की श्मशान में और किसी की कदम्ब या इमली वृक्ष तले अथवा वट वृक्ष पर बैठ कर की जाती है, कुछ/साधनाएं पूर्णिमा के दिन, कुछ साधनाएं अमावस्या के दिन, और कुछ साधनाए अष्टमी के दिन सम्पन्न की जाती हैं। प्रत्येक साधना हेतु मन्त्र संख्या अलग-अलग है और उसी के अनुसार हवन का भी विधान है।

कुछ यक्षिणी साधनाओं में साधक को विशेष रसायन, कुछ विशेष गुटिका अथवा विशेष अंजन प्राप्त होता है जैसे घण्टा यक्षिणी साधक को अपने वर से वह शक्ति देती है कि वह साधक किसी से भी वैर मोल लेता है और विजयी होता है, इसी प्रकार दृश्य-अदृश्य साधना हेतु मदना यक्षिणी उत्तम है, जिसमें यक्षिणी सिद्ध होकर साधक को जो गुटिका प्रदान करती है, उससे उसे अदृश्य सिद्धि प्राप्त होती है। महामाया यक्षिणी सिद्ध हो कर प्रसन्न होने पर साधक को ऐसा रसायन प्रदान करती है कि साधक के शरीर पर झुर्रियां तथा पके हुए बाल इत्यादि के दोष दूर हो जाते हैं, और वह पूर्ण निरोग हो जाता है। भूमि में गड़े धन को देखने की शक्ति मदन मेखला यक्षिणी से प्राप्त होती है, तो दूर गमन साधना में सिद्धि सुलोचना यक्षिणी से प्राप्त होती है। कामेश्वरी यक्षिणी साधक को दिव्य अलंकार धन, वस्त्रादि प्रदान करती है, तो सुरसुन्दरी यक्षिणी साधक को राजत्व प्रदान करती है।

यदि साधक मातृ रूप में भावना रखते हुए साधना करता है तो यक्षिणी देवी उसे धन, राजत्व, उत्तम द्रव्य इत्यादि प्रदान करते हुए उसे पुत्र की भांति पालना करती है। भगिनी रूप में साधना करने पर यक्षिणी साधक को कोई दिव्य वस्तु प्रदान करती है तथा साधक का विवाह श्रेष्ठ कन्या के साथ होता है, अपने प्रेम आदि में पूर्ण सफलता मिलती है। यदि प्रिया रूप में साधना करता है, तो साधक को समस्त ऐश्वर्य प्रदान करती है, इसमें यह ध्यान रहे कि साधक यक्षिणी को प्रिया रूप में सिद्ध करने पर अपनी विवाहिता स्त्री को छोड़ कर किसी अन्य स्त्री के साथ गमन न करें अन्यथा सभी सिद्धियां नष्ट हो जाती हैं।

आगे कुछ विशेष साधनाएं स्पष्ट की जा रही हैं, उसी के अनुसार साधक साधना कर अपने जीवन में सिद्धि का एक नया अध्याय अवश्य जोड़ें।—

वट यक्षिणी साधना

यह साधना सात दिन की है, तथा कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से ही प्रारम्भ की जाती है। पूर्ण विधान के अनुसार मन्त्र जप संख्या २० हजार आवश्यक है। पुरश्चरण दो लाख मन्त्रों का है, पिछले पृष्ठों में दिये गये विधान के अनुसार मुद्रा इत्यादि से यक्षिणी का आह्वान करें, आह्वान में जहां अमुक लिखा है, वहां वट यक्षिणी का प्रयोग करें।

विनियोग

ॐ अस्य यक्षिणीमन्त्रस्य विश्रवाऋषिरनुष्टुप्छन्दः यक्षिणी देवता ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

हाथ में जल लेकर उपरोक्त विनियोग का उच्चारण कर जल भूमि पर छोड़ दें तथा अपनी कामना पूर्ति हेतु संकल्प लें, इस समय यह निश्चित करे कि किस रूप में यक्षिणी की साधना करनी है, उसी के अनुसार मुद्रा बनाए तथा वही स्वरूप को ध्यान रखते हुए अनुष्ठान करें—

ध्यान मन्त्र

ॐ अरुणचन्दनवस्त्रविभूषितां सबलतोदयतुल्यतनूरुहाम्।
स्मरकुरंगदृशं वटयक्षिणीं कमुकनागलतादलपुष्कराम्॥

सामग्री

वट यक्षिणी चित्र, काम्य शक्ति मण्डल, वट यक्षिणी यन्त्र, नौ यक्षिणी पीठ शक्ति चक्र अष्ट क्रिया शक्ति चक्र तथा यक्षिणी माला के अतिरिक्त धूप, अगरबत्ती, पुष्प, चन्दन, पात्र में जल आवश्यक है।

विधान

सर्वप्रथम यक्षिणी पूजन करें, अपने सामने एक पट्टे पर लाल वस्त्र बिछा कर उस पर काम्य शक्ति मण्डल जो कि कागज पर बना है उसे स्थापित करें, चारों कोनों पर चार टीकी लगाएं इसके मध्य में गोल घेरे में वट यक्षिणी यन्त्र स्थापित करें, इसके बाहर के घेरे में नौ पीठ शक्तियों का आह्वान करते हुए यक्षिणी पीठ शक्ति चक्र स्थापित करें—

१-ॐ कामदायै नमः, २-ॐ मदनायै नमः, ३-ॐ नक्तायै नमः, ४-ॐ मधुरायै नमः, ५-ॐ मधुराननायै नमः, ६-ॐ नर्मदायै नमः, ७-ॐ भोगदायै नमः, ८-ॐ नन्दायै नमः, ९-मध्ये ॐ नमः।

अब बाहर के घेरे में वट यक्षिणी अष्ट क्रिया शक्तियां एक-एक का आह्वान करते हुए स्थापित करें। ये शक्तियां हैं—

१-ॐ सुनन्दायै नमः, २-ॐ चन्द्रिकायै नमः, ३-ॐ हासायै नमः, ४-ॐ सुपालायै नमः, ५-ॐ मद विह्वलायै नमः, ६-ॐ आमोदायै नमः, ७-ॐ प्रमोदायै नमः, ८-ॐ वसुदेवायै नमः।

वट यक्षिणी चित्र साधक के नेत्रों के सामने होना चाहिए उसके नेत्रों में अपने नेत्र डालते हुए मन्त्र जप करना है।

यदि सुविधा हो तो बरगद वृक्ष के नीचे मन्त्र जप किया जा सकता है, अन्यथा साधना के समय बरगद के पत्ते नित्य नवीन अपने पूजा स्थान में अवश्य ला कर रखें—

मन्त्र

।। एह्येहि यक्षि यक्षि महाविद्या वटवृक्षनिवासिनि शीघ्रं मे सर्व सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा ।।

जब सात दिन बीत जाते हैं तो आठवें दिन अर्द्ध रात्रि के पश्चात् नूपुर अर्थात् पायल की ध्वनि सुनाई देती है, साधक उस समय भय रहित होकर वट यक्षिणी चित्र के नेत्रों में देखता हुआ, मन्त्र जप करता रहे।

जब यक्षिणी साक्षात् उपस्थित हो तो जिस रूप में कामना की है, उसी रूप में उसकी पूजा कर अपनी कामना प्राप्ति का वर मांगें।

नित्य साधना के बाद जल बरगद वृक्ष में डाल देना चाहिए, यह साधना निश्चय ही यक्षिणी द्वारा साधक को दिव्य वस्त्र तथा सिद्ध रसायन और अलंकार प्रदान करने वाली है। यक्षिणी के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है। *

नटी यक्षिणी साधना

यह साधना विशेष प्रकार की साधना है और विश्वामित्र ऋषि ने इस साधना को बला और अति बला विद्या कहा है, इसमें यक्षिणी के नर्तकी के रूप की साधना की जाती है।

विनियोग

ॐअस्य नटी यक्षिणीमन्त्रस्य विश्वामित्र ऋषिरनुष्टुप्छन्दः बला अतिबला देवता ममाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

हाथ में जल लेकर संकल्प लेकर जल भूमि पर छोड़ दें और साधना में यक्षिणी का स्वरूप निश्चित कर उसी रूप में प्रार्थना करें।

ध्यान मन्त्र

ॐ त्रैलोक्य मोहिनीं गौरीं विचित्राम्बरधारिणीम्। विचित्रालंकृतां रम्यां नर्तकीवेषधारिणीम् ।।

सामग्री

नटी यक्षिणी चित्र, बला विद्या तांत्रोक्त फल, अतिबला विद्या तांत्रोक्त फल, चन्दन माला, इसके अतिरिक्त साधक अशोक वृक्ष के पत्ते, गन्ध, अक्षत, पुष्प, दीप (घृत) की व्यवस्था भी अवश्य कर लें।

विधान

यह साधना किसी भी पूर्णिमा से अर्द्ध रात्रि को प्रारम्भ कर अगली पूर्णिमा की अर्द्ध रात्रि को ही पूर्ण की जाती है अर्थात् एक माह तक पूजा विधान है। प्रतिदिन एक सहस्र अर्थात् एक हजार मन्त्र जप करना है, अपने सामने एक बाजोट पर लाल कढ़ाई युक्त चुनरी बिछा कर चन्दन से एक गोल घेरा बना कर तीन अशोक वृक्ष के पत्ते रखें, मध्य में एक सुगन्धित पुष्प का आसन देकर **नटी यक्षिणी यन्त्र** स्थापित करें। बांई ओर **बला**

विद्या तांत्रोक्त फल स्थापित करें तथा दाहिनी ओर प्रतिबला विद्या तांत्रोक्त फल स्थापित करें। रात्रि में ही भोजन कर पूजन करना चाहिए। कुंकुम, गुलाल अबीर, अक्षत, अगरबत्ती से तीनों का पूजन कर घी का दीपक जलाएं, रात्रि में जितने समय तक मन्त्र जप करें उतने समय तक घी का दीपक जलते रहना चाहिए। प्रतिदिन नटी यक्षिणी देवी का इसी प्रकार पूजन करते हुए मन्त्र जप करना चाहिए।

मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं नटि महानटि स्वरूपवती स्वाहा ॥

साधना सही दिशा में जा रही है, इसका आभास इस रूप में होता है कि अर्द्ध रात्रि के पश्चात् देवी कुछ भय देकर परीक्षा लेती है, यदि साधक निश्चिन्त रूप से सुदृढ़ होकर नियमित साधना करता रहता है, तो एक माह के पश्चात् नटी यक्षिणी समस्त विद्याओं से युक्त उपस्थित होती है और मुस्कुराहट के साथ कहती है कि **जो तुम्हारे मन में है वह वर मांग लो।**

श्रेष्ठ साधक इसे सुन कर जिस भावना अर्थात् माता, बहिन या प्रिया की भावना से साधना की हो उसी रूप में उसे उत्तर दें और सन्तुष्ट करें। माता रूप में यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को सिद्धि द्रव्य तथा ज्ञान देती है जिससे वह अतीत और अनागत सभी बातों का ज्ञान रखने योग्य हो जाता है। प्रिया रूप में वह साधक को धन प्रदान करती है, बहिन रूप में वह साधक के जीवन की विशेष इच्छाओं की पूर्ति का आशीर्वाद प्रदान करती है।

एक माह के पश्चात् साधक को अपनी सभी सामग्री उसी कपड़े में बांध कर ऐसी जगह रख देनी चाहिए जहां किसी की दृष्टि न पड़े।

एक बार सिद्धि प्राप्त होने पर जब भी साधक मन्त्रोच्चारण कर यक्षिणी का आह्वान करता है तो वह तत्काल उपस्थित होती है, इसमें सन्देह करने वाला अथवा अज्ञानता वश परीक्षा लेने वाला साधक पीड़ाओं को ही प्राप्त करता है। ✶

सुर सुन्दरी यक्षिणी साधना

यह साधना भैरव द्वारा प्रदान की गयी है, राजत्व प्राप्ति अर्थात् नौकरी में सफलता, प्रमोशन, राजकीय कार्यों में बाधा के निवारण हेतु अर्थात् वर्तमान समय में सरकारी दृष्टि से रुके हुए कार्य जैसे—इन्कम टैक्स सेल्स टैक्स सम्बन्धी परेशानी, सरकारी ऋण, ऐसा अन्य कोई भी कार्य जिसमें सरकारी अधिकारियों से कार्य पड़ता हो एवं बाधा उत्पन्न होती हो तो यह साधना अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए।

ध्यान

पूर्णचन्द्राननां गौरीं विचित्राम्बरधारिणीम्। पीनोन्नतकुचारामां सर्वज्ञानभयप्रदाम् ॥

विनियोग

ॐ अस्य श्री सुर सुन्दरी साधनं दुर्वासा ऋषिरनुष्टुप्छन्दः उन्मत्त भैरव देवता मम अभीष्टकार्य सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

सामग्री

इस साधना में लिंग पूजा का विशेष विधान है, अतः यक्षिणी एकलिंग, तांत्रोक्त तीन कार्य सिद्धि रुद्राक्ष सुर सुन्दरी यन्त्र, चित्र आवश्यक है, इसके अतिरिक्त पूजन में धूप, दीप नैवेद्य, गन्ध, चन्दन, कपूर, सुपारी की भी आवश्यकता रहती है।

विधान

अष्टमी के दिन प्रारम्भ की जाने वाली यह साधना प्रातः प्रारम्भ कर सर्वप्रथम अपना दैनिक पूजन कर जल आचमन कर एक माला " ॐ सहस्रार हुं फट् " मन्त्र से दिग्बन्धन करें, साधक पीले वस्त्र धारण कर पश्चिम दिश की ओर मुंह कर अपने सामने सारी सामग्री रख कर पूजन व साधना प्रारम्भ करें।

हाथ में जल लेकर दरिद्रता निवारण हेतु प्रार्थना कर दृढ़ मन से पूरा विधान संकल्प कर ध्यान मन्त्र का उच्चारण करते हुए जिस प्रकार की भावना हो अर्थात् माता, बहन या प्रिया, उसी के अनुसार निवेदन करें। पूजन में सर्वप्रथम यन्त्र एवं चित्र की पुजा चन्दन तथा गन्ध से करें, एक ओर दीपक तथा दूसरी ओर धूप जलाएं, चित्र के आगे चांदी के वर्क में लिपटा पान का बीड़ा तथा नैवेद्य अर्पित करें। रात्रि के समय मन्त्र जप प्रारम्भ करें, यह अनुष्ठान अष्टमी से प्रारम्भ कर नित्य एक हजार मन्त्र जप सम्पन्न करना आवश्यक है। साधक को साधना काल के दौरान भूमि शयन तथा नमक खटाई रहित भोजन करना चाहिए। सामने जो यक्षिणी एकलिंग स्थापित है उसका भी पूजन चन्दन से करना चाहिए।

मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं आगच्छ सुर सुन्दरि स्वाहा ॥

नित्य नवीन धूप, दीप, नैवेद्य से पूजन कर इस मन्त्र का जप करना आवश्यक है, कुछ साधकों को एक सप्ताह, कुछ को एक पक्ष और कुछ को एक माह में सफलता मिलती है। साधना में जब सफलता प्राप्त होती है तो यक्षिणी सुर सुन्दरी उपस्थित होती है, उस समय उसे जल का अर्घ्य अर्पित करें, तब यक्षिणी की ओर से प्रश्न आता है— " दत्वार्घ्यं प्रणयं मन्त्रो कृतो सा त्वं किमिच्छसि " (हे प्रिय साधक तू क्या चाहता है)। तब साधक को उत्तर देना चाहिए— " देवि दारिद्रचदग्धोस्मि तन्मे नाशय नाशय " (हे देवी मैं दरिद्रता की अग्नि मे जल रहा हूं उसे नष्ट करो नष्ट करो)। तब सुर सुन्दरी सन्तुष्ट होकर साधक को दिव्य धन धान्य एवं दीर्घायु प्रदान करती है।

साधक जिस भावना से साधना करता है सुर सुन्दरी यक्षिणी उसी रूप में पालना करती है, उन्मत्त भैरव कहते हैं कि सुर सुन्दरी साधना से तो साधक मन में जो भाव लायेगा उसी के अनुसार फल प्राप्त होगा। इस साधना में सिद्धि से साधक राजत्व प्राप्त करता है, पूर्ण सिद्धि प्राप्त साधक तो स्वयं राजा के समान बन जाता है। ●

यक्षिणी साधना के तीनों प्रयोग साधक को एक-एक कर अवश्य सम्पन्न करने चाहिए, जिसने इन उत्तम साधनाओं को नहीं सम्पन्न किया उसका जीवन तो निश्चय ही व्यर्थ है।

॥ इति यक्षिणी साधनम् ॥